तबले का सचित्र वर्णन

तबला

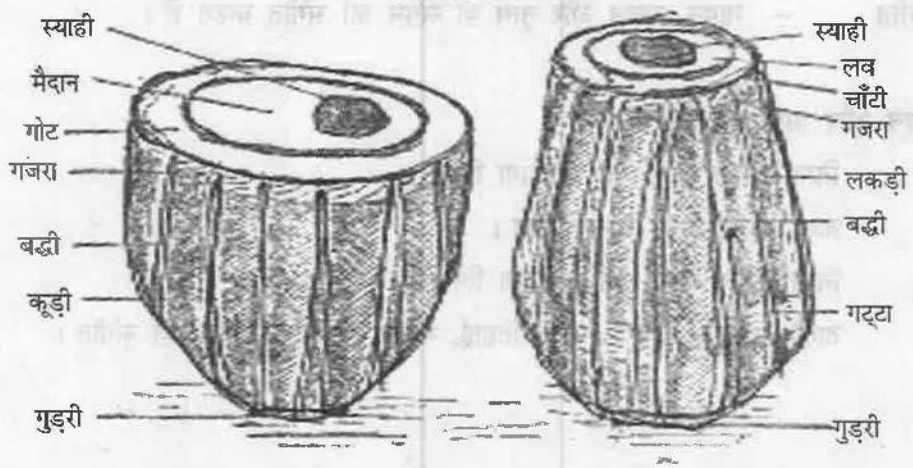

बांया दाहिना

तबले का वर्ण

दायें हाथ से तबले पर बजने वाले वर्ण

तबले के मुख्य दस वर्ण हैं :

(1) ता या ना

(2) ति

(3) दिं या चुं

(4) तू या तिं

(5) ते

(6) टे या रे

बायें हाथ से बायाँ पर बजने वाले वर्ण

(7) गे या धे

(8) क, के, की, क, त

दोनों हाथ से बजने वाले वर्ण

(9) धा

(10) धिं

वर्णों को बजाने की विधि

(1) ता या ना – दाहिने पर मध्यम अंगुली को बगैर स्पर्श किये मध्यमा से आघात करने पर ता या ना निकलता है।

(2) तिं या तीं – तर्जनी से सिर्फ दाहिने के लव पर मारने से निकलता है।

(3) दिं या युं – दाहिने हाथ की पांच अंगुलियों को मिलाकर स्याही के ऊपर आघात करने से निकलता है।

(4) तू या तीं – तर्जनी से दाहिनी ओर बीच में स्याही के किनारे मारने से निकलता है।

(5) ती या ते – मध्यम अंगुली से स्याही के बीच में आघात करने से निकलता है।

(6) रे या टे – मध्यम अंगुली से स्याही के बीच में दबाकर आघात करने से रे या टे निकलता है।

बायां पर बजने वाले वर्ण

(7) गे या धे – बायें हाथ के तर्जनी या मध्यमा अंगुली से लव पर आघात करने से निकलता है।

(8) क, के, की कत – बायें हाथ की अंगुलियों को मिलाकर एक साथ आघात करने से निकलता है।

(9) धा – दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली और बायें हाथ की मध्यमा या तर्जनी अंगुली दोनों से एक साथ आघात करने पर धा निकलता है।

(10) धिं – धा के समान ही लव पर मारने से धिं निकलता है।

तबले के अंगों का सचित्र वर्णन

दायाँ :

(1) लकड़ी – लकड़ी के ऊपर सम्पूर्ण चीजें लगाकर तैयार होने पर उसे दाहिना या तबला बोला जाता है।

(2) बद्धी – यह चमड़े की होती है।

(3) गट्टा – लकड़ी का बेलनाकार जो कि बद्धी से दबा रहता है, इसे गट्टा कहते हैं।

(4) गजरा – यह पूड़ी के चारों ओर चमड़े से गुँथी हुई होती है।

(5) गुड़की – यह चमड़े की बद्धी द्वारा ही बनती हैं लेकिन तबलें के नीचे होती है।

(6) घट – गजेट में 16 छिद्रों को घट कहते हैं।

(7) पूड़ी – यह बकरे के खाल की होती है जिसमें बीचोबीच स्याही लगी रहती है।

(8) लव – स्याही और चोटी के बीच की जगह को लव कहते हैं।

(9) चाँटी – किनारी को चाँटी कहते हैं।

(10) स्याही – तबले पर गोलाकार काले मसाला लगे हुये भाग को स्याही कहते हैं।

बायाँ

(1) कूँड़ी – यह मिट्टी या धातु की बनी होती है।

(2) बद्धी – यह चमड़े की होती हैं जो कूँड़ी को कसे रहती है।

(3) डोरी – बायां में बद्धी के जगह पर इसे भी लगाया जाता है।

(4) छल्ला – बायें की पूड़ी को कसने के लिये डोरी में लगा दिया जाता है।

(5) मैदान – जो दायाँ में लव होता है उसी तरह बायाँ में मैंदान होता है।

(6) पूड़ी – दाहिने की तरह इसमें भी पूड़ी रहती है।

तबले के अंगों का सचित्र वर्णन

(7) गोट – जो दायाँ में चोंटी कहलाता है वही बायाँ में गोट होता है।

(8) स्याही – बायाँ में कुछ किनारे पर दायाँ की भाँति गोलाकार काले रंग के मसाले को स्याही कहते हैं।

(9) गजरा – जिसमें से होकर डोरी या बद्धी लगी रहती हैं उसे गजरा कहते हैं।

(10) घट – डोरी कसने के लिये जो 16 छिद्र होता है। उसे घट कहते हैं।

(11) गुड़टी – बायाँ के पेंदी वाले भाग में चमड़े की गुंथी हुई गोलाकार भाग को जिसमें डोरी या बद्धी लगी रहती है गुड़टी कहते हैं।

प्रश्न एवं अभ्यास :

(1) तबला के वर्णों को लिखें।

(2) तबला के वर्णों को बजाने का स्थान बतायें।

(3) तबले का चित्र बनाकर उसके अंगों को लिखें।

(4) पखावज का चित्र बनाकर उसके अंगों का वर्णन करें।

(5) पखावज के वर्णों को लिखें।